Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.3 No.18

Impact Factor
Quarterly
Oct-Nov-Dec 2018

निराला का गद्य साहित्य

डॉ. अजय के. पटेल

सारांश:

कवि, आलोचक, निबंधकार, कथाकार और पत्रकार निराला का साहित्यकार व्यक्तित्व बहुआयामी है। निराला के गद्य में एक ओर छायावादी रोमांटिक भाव बोध है तो दूसरी तरफ प्रगतिवादी चेतना के यथार्थवादी प्रवृत्ति का संस्कार भी है तो प्रयोगशील चेतना का विकास भी है। फ्रंचेस्का आर्सिनी ने इसी को दृष्टि में ही रखकर लिखा है- " 'छायावाद' के सबसे अधिक प्रयोगात्मक और विस्तृत कवि, और मौलिक रेखाचित्रों, कहानियों, तथा लघु उपन्यासों के लेखक 'निराला' को अब इस शताब्दी के सबसे अग्रणी हिंदी साहित्यकारों में गिना जाता है।"

मुख्य शब्द: गद्य साहित्य,आलोचक, कवि, उपन्यासकार, बहुआयामी व्यक्तित्व।

प्रस्तावना:

छायावादी कवियों के साहित्यिक विश्लेषण और अनुसंधान में उनके गद्य कर्म को उतना विश्लेषित नहीं किया गया जितना उनके कवि कर्म को विश्लेषित किया गया है। यह चूक निराला के गद्य कर्म के प्रति भी हुई है। निराला का गद्य लेखन भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि प्रेमचंद और शुक्ल का। "निराला का गद्य अन्य छायावादी कवियों के गद्य से अलग है। ...निराला का गद्य बुद्धि प्रवण और तर्कमूलक है।" (हिंदी आलोचना:विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, २०१३, पृ.सं.-९०) निराला के साहित्यकार व्यक्तित्व का सही आकलन तभी संभव है जब उनके गद्य तथा काव्य दोनों को बराबर

तौला जाय, अन्यथा निराला को समझना अंधेरे में तीर चलाना ही साबित होगा, कारण यह कि निराला अपने गद्य के माध्यम से कला और जीवन जगत दोनों की समस्यायों से टकराते है और मध्यदेश की जातीयता के नवजागरण स्वरुप का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी कारण रामविलास शर्मा उनके गद्यकार रूप के सन्दर्भ में लिखते हैं, "गद्य लेखक निराला ने बालमुकुन्द गुप्त और प्रेमचंद की परंपरा को और ऊँचा उठाया है। उसने गद्य लेखन को काव्य रचना के सामान ही सरस और कलापूर्ण बना दिया है। हिंदी पर भाषा की नयी क्षमता निराला के गद्य में प्रकट हुई।' (हिंदी आलोचना का विकास: नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २०१५) पर यहाँ शर्मा जी एक बात जिसको कहना चाहिए था वह यह कि हिंदी भाषा और मध्यदेशीय नव जागरण की नयी क्षमता निराला के गद्य में प्रकट हुई है। जिसका विकास स्वातंत्रोत्तर साहित्य में निरंतर हो रहा है। यही कारण है छायावादी लेखकों में जितने प्रासंगिक निराला है उतना अन्य नहीं।

निराला का गद्य साहित्य और भाषा शिल्प:

निराला का गद्य एक ओर वाद-विवाद में जूझने वाले कुशल तार्किक और व्यंग्य लेखक का गद्य है, दूसरी ओर उसमें कवि सुलभ चित्रमयता, भाव-गाम्भीर्यता के भी दर्शन होते हैं । चित्रमयता, अर्थवक्रता और भाव - सघनता के कारण निराला के गद्य का ऊँचा स्थान है ।

निराला के गद्य साहित्य का अपना एक सहज रूप है। जीतने अलंकार बोलचाल की भाषा में आते है उतने ही अलंकार उनके गद्य साहित्य में है। स्वर का क्रमशः चढ़ते जाना, फिर अचानक उतार और स्तंभित-सा विराम पर ठहरना, यह निराला के उस गद्य साहित्य की विशेषता हैं जिसमे आवेश में बोलते हुए वह कला की बात भूल जाते थे। उनके सहजभव में बड़ी ऊर्जा है, उनके हृदय का अपार सौंदर्य भी। निराला का गद्य बहुत सीधे और जोरदार ढंग से बात कहता है। उसमे जरूरत से ज्यादा अर्थवक्रता उनकी संस्कृत-निष्ठ भाषा में हैं और 'गुलाबी उर्दू' में भी है। चतुरी चमार और बिल्लेसुर बकरिहा का गद्य उनकी बोलचाल की अवधि से मिलता-जुलता है।

वास्तव में निराला के गद्य का जीवन संग्राम उनके कथासाहित्य में ही दीखता है। निराला के कथा-साहित्य की विशेषता यह है कि उन्होंने कथा को केवल लिखा ही नहीं है बल्कि उसके पात्र भी है और अन्य पात्रों के साथ उसको जिया भी है। गोपाल राय ने लिखा है- "निराला की कहानियाँ बेहद आत्मपरक है। आत्मवृत्ति में कल्पना की चाशनी डालकर समकालीन जीवन पर व्यंग्य करना निराला की अपनी विशेषता कही जा सकती है।....'स्वामी शारदानंद महाराज और मैं', और 'देवी' इसी प्रकार की कल्पना मिश्रित आत्मकथाएँ हैं।" (हिंदी कहानी का विकास: गोपाल राय,राजकमल प्रकाशन, २०११) निराला प्रत्यक्षानुभव के साहित्यकार हैं। निराला के कहानियों में जो रूढ़ीविरोधी चेतना दिखती है वह किताबी अक्षरों

तक ही सीमित नहीं है उसके प्रत्यक्ष भोक्ता भी हैं। निराला के साहित्य में जो नवजागरण की चेतना व्याप्ति है वह उनके जीवन का अंग भी है।

'चतुरी चमार' कहानी निराला का आत्मवृत्त ही है और इसमें जिस बेबाक तरीके से सामाजिक रूढ़ियों का विरोध है वह सत्य वृतांत भी है। निराला ने इसमें लिखा है -"समय-समय पर लोध, पासी, धोबी और चमारों का ब्रह्म भोज भी चलता रहा। घृतपक्व मसालेदारलार मांस के खुशबू से जिसकी भी लार टपकी, आप निमंत्रित होने को पुछा। इस तरह मेरा मकान साधारण जनों का अड्डा, बल्कि house of commonsहो गया।" (चतुरी चमार: निराला राजकमल प्रकाशन सं. २०१४) आगे फिर लिखते हैं " जब मैं डाकखाना या बहार गाँव से लौटता हूँ में चिरंजीव अर्जुन के यहाँ होते हैं या घर ही पर उसे घेरकर पढ़ाते रहते। चमारों के टीले में गोस्वामी जी के इस कथन को 'मनहु मत्त गज्पन निरखि सिंह किशोरहिं चोप' वह कई बार सार्थक करते दिख पड़े। मैं ब्राहमण-संस्कारों की सब बातों को समझ गया। पर उसे उपदेश क्या देता? चमार दबेंगे, ब्राह्मण दबायेंगे। दवा है दोनों की जड़ें मार दी जायें, पर यह सहज साध्य नहीं।" (उपर्युक्त, पृ.सं. १७)

निराला ने नारी पात्रों को सबला के रूप में अंकित किया हो। चाहे 'तोड़ती पत्थर' की पत्थर तक को तोड़ देने वाली नायिका हो या 'अप्सरा' उपन्यास की नायिका 'कनक' के व्यक्तित्व का जिक्र हो-" बिना किसी इंगित के ही जनता की क्षुब्ध तरंग शांति हो गयी। सबके अंग रूप की तड़ित से प्रहत निश्चेष्ट रह गए। सर्वेश्वरी का हाथ पकडे हुए कनक मोटर से उतर रही थी। सबकी आँखों के संध्याकाश जैसे सुन्दर इन्द्रधनुष अंकित हो गया है।सबने देखा मूर्तिमती प्रभात की किरण है।' (निराला रचनावली भाग ३सं. नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६) ये जो 'प्रभात' कनक में लोगों ने देखा वह नारी की नवीन जीवनशक्ति की जिजीविषा है जिसे निराला जी नारियों में देखने के आकांक्षी थे। इसी तरह निराला जी 'बाहरी स्वाधीनता और स्त्रियाँ' शीर्षक निबंध में स्त्रियों की सामाजिक स्वतंत्रता का प्रश्न उठाते हुए कहा है कि "जो जीवन बाहरी स्वतंत्रता नहीं प्राप्त कर सकता, वह मुक्ति-जैसी सार्वभौमिक स्वतंत्रता कब प्राप्त कर सकता है? उसकी धर्म की साधना भी ढोंग है। धर्म तो वह है जिससे अर्थ, काम, तथा मोक्ष, तीनों मिल सकें। सच्चा धर्म इस समय स्त्रियों के सब प्रकार के बंधन ढीले कर देना, उन्हें शिक्षा की ज्योति से निर्मल कर देना ही है, जिससे देश की तमाम कामनाओं की सिद्धि होगी और स्वतंत्र-सुखी जीवन बाह्य स्वतंत्रता से तृप्त होकर आत्मिक मुक्ति के संधान में लगेगा।' (निराला रचनावली-६ : सं. नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, २००६)

निराला' सम्पूर्ण गद्य के विविध रूपों और विशेषकर कथा साहित्य में आस्थावान रहे। 'निराला' का आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी मानवतावादी था। इसीलिए मानव मन-मस्तिष्क में संचार करने वाले सुख-दुख, राग-द्वेष 'निराला' के गद्य साहित्य में मुखर रूप में विद्यमान हैं। 'निराला' का मानव देवत्व की तलाश में नहीं, उसकी ऊर्जा देवत्व को गंतव्य मान कर गतिमान नहीं होती किन्तु देवत्व का पर्याय बन कर सामने आती है। 'निराला' के गद्य में

वेदान्त की अनुप्रेरणा और विवेकानंद की वाणी का प्रभाव ही नहीं बल्कि उनके व्यक्तित्व की विराटता भी विद्यमान है। जब हम 'निराला' के काव्य और उनके गद्य में मौजूद मानवचेतना से साक्षात्कार करते हैं तो इस सत्य का अहसास होने लगता है कि पद्य जल नहीं है और गद्य पाषाण नहीं है। वस्तुतः काव्य और गद्य के बीच स्पष्ट धारणात्मक रेखा खींचना कठिन है। हर गद्य में कविता संभव है और हर कविता में गद्य। यह भी सच है कि क्रियात्मक रूप में कविता और गद्य के बीच एक पारंपरिक अंतर माना जाता है और इसी आधार पर कविता में अधि सूक्ष्मता, वाक्संक्षिप्तता, संयम एवं लयात्मकता दिखाई पड़ती है तथा गद्य में अधिक विस्तार, खुलापन एवं व्यापकता का बोध होता है। कुछ आलोचक यह मानते हैं कि काव्य की अपेक्षा गद्य में मूल्यनिर्णय की क्षमता अधिक होती है। जबकि 'निराला' के काव्य और गद्य को एक-दूसरे के समान्तर रख कर देखा जाए तो दोनों ही विधाएं समान रूप से मूल्य-निर्णायक साबित होती हैं। अतः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वे कौन से कारण रहे होंगे जिन्होने 'निराला' को काव्य के साथ-साथ गद्य सृजन से भी जोड़ा, वह भी समउत्कृष्टता और समर्पण के साथ। इस प्रश्न का उत्तर इस एक तथ्य में निहित है कि 'निराला' के भीतर एक संवेगतत्व निरंतर प्रवाहित रहा। जीवन के विविध पक्षों में विचरण के कारण ही ज़मीन से जुड़े 'निराला' के भीतर हमेशा एक अंतर्द्वन्द्व चलता रहा। वे उद्वेलित होते रहे। जीवन की विषमताओं को ले कर उनके मन में सदा पीड़ा रही कि एक मानव दूसरे मानव का शोषण क्यों करता है? यह सहज प्रश्न और जिज्ञासा उन्हें आकुल करती रही और अंतर्मन में अनजाने में ही एक चिंतन प्रक्रिया बराबर चलती रही। यह उनके भीतर क्रांतिचेतना की पीठिका एवं प्रेरक बनी। यही क्रांतिचेतना अथवा मानववाद 'निराला' से काव्य के साथ-साथ गद्य सृजन भी कराती रही।

'निराला' के गद्य में विद्यमान मानववाद का तीन बिन्दुओं में आकलन किया जा सकता है- 'निराला' के उपन्यासों में मानववाद, कथासाहित्य में मानववाद और रेखाचित्रों-संस्मरणों में मानववाद। इन तीन बिन्दुओं के अध्ययन के उपरांत 'निराला' के मानवतावादी दृष्टिकोण की विराटता, गहनता और विस्तार को समझना आसान हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो ये तीनों बिन्दु 'निराला' के मानस के मानवीय पूर्णत्व से परिचित कराते हैं। 'निराला' का प्रथम उपन्यास 'अप्सरा' सन् १९३१में प्रकाशित हुआ। सन् १९३३में 'अलका', १९३६में प्रभावती एवं 'निरुपमा', १९४६में 'चोटी की पकड़' तथा १९५०में 'कालेकारनामे' उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'निराला' की विचार प्रक्रिया को आधार बना कर यह कहा जा सकता है कि लगभग २५वर्ष तक 'निराला' गद्य साहित्य के माध्यम से मानवमूल्यों एवं संवेदनाओं के आकलन और उद्घाटन में संलग्न रहे। इस सतत् प्रवाहित प्रक्रिया के चलते उन्होंने 'अप्सरा' में समर्पण, त्याग और बलिदान की प्रेरणा का आधार बनाया। जीवन को आस्वाद की आश्वस्ति दी, कर्म की मानववादी मनोभूमि पर निर्भीकता और स्वावलम्बन को स्थापित किया। 'अलका' में नारी के स्वाभिमान, मानव का अधूरापन, मानवीय विवशता, विडम्बना, अत्याचार, उत्पीड़णन और शोषण के विविध रूपों को प्रस्तुत किया। 'प्रभावती' में नारी गौरव

के साथ प्रेम की उन्मुक्त चेतना को रेखांकित किया। 'निरुपमा' में उन्होंने सामाजिक वैषम्य, नारी गरिमा के साथ मानसिक वृत्तियों का विश्लेषण एवं कर्मचेतना को प्रकट किया। 'चोटी की पकड़' और 'कालेकारनामे' उपन्यास स्वदेशी आंदोलन और आंदोलन की सामाजिक भूमिका पर आधारित है, जिन्हें मानवीय गरिमा, मानवीय औदात्य के साथ-साथ मानवीय बोध और मनुष्य की साधना को मुखर किया है।

'निराला' की कहानियां हैं -चतुरी चमार, देवी, राजा साहिब ने ठेंगा दिखाया, हिरनी, अर्थ, सफलता, क्या देखा, सुकुल की बीवी, श्रीमती गजानन और कला की रूपरेखा। 'चतुरी चमार' और 'सुकुल की बीवी' दो समांतर धरातल की कहानियां हैं। एक में मानवीय विडम्बना और जीवन का आक्रोश उद्घाटित हुआ है तो दूसरी में नारीजीवन की विडम्बना के प्रति रूढ़ि से मुक्ति का आह्वान किया गया है। 'निराला' ने 'देवी' में मानवीय पर्तों की अंदरूनी बखिया को सामने रखा है तो 'राजा साहिब ने ठेंगा दिखाया' में अभिजात्यवर्ग के बौद्धिक दिवालियापन पर कटाक्ष किया है। 'हिरनी' मानवीयबोध का प्रश्न उठाती है और 'श्रीमती गजानन' नारी के स्वाभिमान से ओतप्रोत है। 'क्या देखा' स्वच्छंद प्रेम की मानववादी अभिव्यक्ति है तो 'कला की रूपरेखा' मानवीय दुष्प्रवृत्तियों पर चोट करती है।

'निराला' के रेखाचित्र एवं संस्मरणों में 'कुल्लीभाट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' का सृजन निराला-साहित्य की अनन्यतम घटना मानी जा सकती है। वस्तुतः 'कुल्लीभाट' में कुल्ली का स्वरूप विद्रोही चेतना के उद्वेलन से आंदोलित हुआ है वहीं 'बिल्लेसुर बकरिहा' को मनुष्य की महत्वाकांक्षा का प्रस्तुतिकरण कहा जा सकता है।

समापन:

'निराला' ने जीवन को समझा, जिया और इसी जीवन को अपने गद्य साहित्य में सम्पूर्णता के साथ उतारा। 'परिमल' के छायावादी 'निराला', 'कुकुरमुत्ता' के प्रयोगवादी 'निराला' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' के चरित्र-अन्वेषी 'निराला' -इन तीनों में एक तत्व समान रूप से मौजूद है, वह है मानवतावादी दृष्टिकोण।इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि 'निराला' के कथा साहित्य को या तो केवल खानापूरी के लिए मूल्यांकित कर दिया जाता है अथवा बंधेबंधाए नियमों और कसौटियों पर उसका परीक्षण कर के अपनी अध्ययन-मूल्यांकन की औपचारिकता की पूर्ति कर दी जाती है। यही कारण है कि 'निराला' का कथा साहित्य एक अप्रत्यक्ष उपेक्षा का शिकार रहा और वह प्रेमचंद के कथा साहित्य के प्रभामंडल के पीछे छिपा रह गया। 'निराला' का कथा साहित्य चर्चित अवश्य हुआ लेकिन उचित मूल्यांकन की कमी के चलते अपने जनबोध को भली-भांति उजागर नहीं कर पाया। वर्तमान चिंतक आज के समय को राजनैतिक समय मानते हैं और आज की रचनाओं में इसी राजनैतिक समय को लिखते और समीक्षा का आधार बनाते हैं जबकि 'निराला' के गद्य के मर्म को समझने के बाद वर्तमान मानवचरित्र को समझना आसान हो जाता है।

संदर्भ सूची:

1. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश ।
2. सं. डा. रामशंकर शुक्ल 'रसाल', भाषा-शब्द-कोष।
3. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, भाग- १
4. डॉ. देवराज पथिक , नयी कविता में राष्ट्रीय-चेतना
5. महेन्द्र चतुर्वेदी एवं ओमप्रकाश गावा , व्यवहारिक हिन्दी पर्यायवाची कोश
6. सं॰ श्याम सुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर, दूसरा खण्ड
7. आचार्य रामचन्द्र वर्मा, लोकभारती प्रमाणित हिन्दी कोश
8. सं. रामप्रकाश त्रिपाठी, हिन्दी विश्वकोश